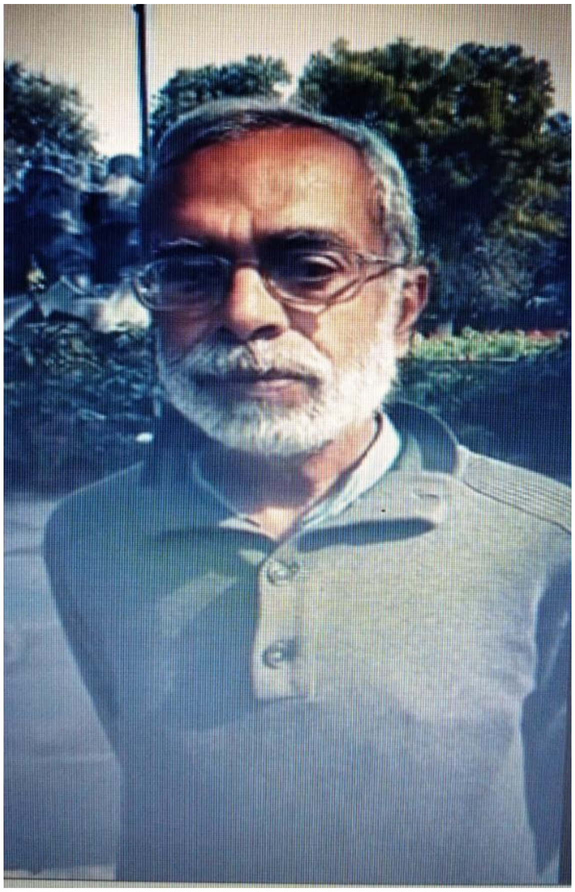
अजय सहाय

30 जुलाई -2020



आज उनका जन्मदिन है, अजय सहाय जी : 59 साल के हो गये : पर अभी भी पूरी तरह से सक्रिय हैं। मैं उनसे जब पहली बार मिला तो दाढ़ी (जो कि ठीकठाक सेट थी, मुझ जैसे सरदारों जैसी नहीं) और कंधे पर गांधी-झोला देखकर श्रद्धाभाव से खुद को रोक न पाया। अरविंद भारत की मारफ़त उनसे करीब 21 साल पहले परिचय हुआ। वो उस दिन सुबह दिल्ली में सरोजिनी नगर वाले मेरे सरकारी फ्लैट में आये थे और मेरी मेज पर पड़ी शूमाकर की 'स्माल इस ब्यूटीफुल' हम दोनों के बीच एक कॉमन-फ्रेंड की तरह बातचीत का आधार बानी। एक कहावत है : दो व्यक्तियों के बीच एक रिश्ता होता है कि उन्होंने वही खास किताब पढ़ी हुई है।

दिल्ली की सडकों पर हुये आपको मिल सकते हैं : अजय सहाय: खासकर यदि आप राजघाट के इर्द गिर्द आते-जाते हों। एक टिपिकल सोशल वर्कर : खादी का कुर्ता-पाजामा, दाढ़ी, चश्मा और झोला। हवाई चप्पलों में पैदल चलते, बस्तियों में या बस में बैठे आंखें बंद किये हुये। बैचलर हैं, ग्रीन पार्क में घर है (माता-पिता कुछ साल पहले गुजर गये, भाई-बहन उसी मकान में अलग मंज़िलों पर रहते है) और उनका पूरा समय समाज को

समर्पित है। घर से सुबह जल्दी ही बिना नाश्ता किये निकल जाते हैं और शाम को सूरज ढलने के बाद ही घर वापिस पहुँचते है। नाश्ता और दिन का खाना बाहर ही सहजता से जहां भी मिल जाये (कोई खिला दे या सस्ते ढाबे से) वहीं कर लेते है । भिक्षु को भगवान कभी भूखा नहीं रखता।

अजय पल-पल नये तजुर्बों से के साथ बहुआयामी ज़िंदगी जीते हैं। सुबह का कुछ खास तय नहीं होता कहाँ और किधर जाना है ? किसी साथी का फ़ोन आया तो उसी को बुला लिया किसी कॉमन जंक्शन पर और चल दिये दिन की सामाजिक यात्रा पर। पास कहीं भी बस्ती दिखी तो उसमें चले जाते हैं और बैठ जाते हैं : एक नयी क्लास पढ़ाने । मंदिर के चबूतरे पर, मस्जिद के अहाते में या पेड़ के नीचे। झुग्गियों और बस्तियों में तो अजय ऐसे घूमते हैं जैसे उनका वहां घर-परिवार हो, वहां के गरीब/उपेक्षित और हाशिये के लोग उनको मसीहा की तरह देखते हैं। दरअसल बच्चों की अनौपचारिक पढ़ाई से ज्यादा महत्वपूर्ण है उनके बीच रहकर लोगों को हिम्मत, हौंसला और उम्मीद देना। तन और मन ज्यादा जरूरी है धन से : सेवा के लिये। उन्होंने कई नवयुवकों को सामाजिक कार्योकी तरफ उन्मुख किया, दिशा दी, रहने-खाने का आश्रय भी दिया और शायद कुछ को थोड़ा भटकाया भी 'नार्मल लाइफ' के समतल रास्ते से ।

अजय ने अपनी स्कूली पढ़ाई दिल्ली के प्रतिष्ठित - सेंट कोलंबस स्कूल : से की, फिर दिल्ली यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन और सोशल वर्क में मास्टर्स की और इरमा-आनंद से रूरल डेवलपमेंट में एमबीए। कुछ समय के लिए एनजीओं में नौकरी भी की। बस्तर के आदिवासी इलाके में काम करने के दौरान उनको नक्सलियों और सरकार की क्रॉसफाइट में बहुत मानसिक/शारीरिक तकलीफ झेलनी पड़ी और वहां की नौकरी छोड़कर वे दिल्ली आ गये । तब से अपने ही तरीके से सामाजिक कार्यों में अपनी भूमिका बखूबी निभा रहे हैं। यूं तो अजय की रुचि और निष्ठा सभी सकारात्मक और रचनात्मक कार्यों , सदविचारों और सज्जनों में है लेकिन वे मुख्यतयः महात्मा गांधी और विनोबा जी से प्रेरित हैं। एकादश व्रत को जीवन का आधार-स्तंभ (उनका ईमेल आईडी ही है : elevenvow@gmail. com) बनाकर साधना के पथ पर सतत चल रहे हैं। संयम और अनिन्दा के मूल्यों पर वो जोर देते हैं और उन पर भरसक अमल भी करते हैं।

जो भी उनसे पहली बार मिलता है या कई साल से भी उन्हें जानता हो : उसको लगता है कि वे करते क्या हैं, उनका मकसद क्या है? कोई संस्था नहीं, कोई आंदोलन नहीं, कोई विशेष संगठन नहीं, कोई नियमित स्थान नहीं : भटकाव-सा लगता है । क्या तलाश रहे हैं - यह तो अजय ही जानें किंतु मुझे उनको देखकर अंदर से वैकल्पिक जीवनशैली पर एक यकीन का भाव उठता है : ऐसे भी तो जिया जा सकता है। सबको आपस में मिलाना, आपकी रुचि अनुसार नेटवर्क में जोड़ना, आपके अच्छे कार्यों (लेख/पर्चा/किताब) द्वारा प्रचार। आजकल टेक्नोलॉजी का पॉजिटिव इस्तेमाल करते हुये ईमेल/व्हाट्सएप्प पर किताबे, पैम्फलेट्स आदि सहमना साथियों को फ़ॉरवर्ड करते रहते हैं।

अजय के पसंदीदा काम हैं : झुग्गी के गरीब बच्चों की पढ़ाई, सत्साहित्य का प्रचार, शाकाहार, सफाई, खादी और स्थानीय उत्पाद (जैसे गुड़, आर्गेनिक फूड, आदि), प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद, हाशिये के लोगों के साथ खड़ा होना ।

वैचारिक तौर पर मैं उन्हें लेफ्ट-टू-सेंटर मानता हूँ, सत्य और अहिंसा के रास्ते समता-शांति को पाने की कोशिश है। उनका कैनवास विस्तृत है जिसमें तरह-तरह के रंग और चित्र हैं। उनका नेटवर्क बहुत बड़ा है : 'प्रयास' के छोटू-आनंद से लेकर गांधी संस्था के बुजुर्ग अमरनाथ भाई तक, सफाईकर्मी कमलजीत भाई से लेकर आईआईटी के विपिन त्रिपाठी सर तक। और यह दुनिया रोज बढ़ती ही रहती है। आप भी उसमें शामिल हो गये तो पढ़ने को भी नया कुछ मिलता रहेगा और अच्छे लोगों से आपका मिलना भी होता रहेगा। न जाने कब किसको किससे और कहां मिलवा दें : अजय सरप्राइज देने में उस्ताद हैं।

संवाद और बातचीत करने का भी उनका अपना ही अंदाज़ है। बीच-बीच में कुछ अटपटे सवाल करते हैं आपको नींद से झकझोरने के लिए। आप किसी और चर्चा में लगे हों तो अचानक सवाल कर देंगे :
- फांसी की सजा होनी चाहिये या नहीं ?
- न्यूनतम और अधिकतम आय का अनुपात कितना होना चाहिये ?
- हमारे देश को परमाणु अस्त्र रखने चाहियें या नहीं ?
- बच्चों को अंग्रेज़ी कौन-सी क्लास से पढ़ानी चाहिये ?
- गर्भपात ठीक है या नहीं ?
- बच्चों का कायदा कैसे बेहतर बनाया जाये ?

ऐसा अक्सर झेन और सूफी गुरु करते हैं आपके ध्यान निरर्थक दुनियावी बकवास से हटाने के लिये। उनका चिंता क्षेत्र भी काफी बड़ा है लेकिन प्रभाव क्षेत्र भी कम नहीं हैं। फ़क़ीर की तरह थोड़ी-सी आग सुलगाकर और आपके अंदर समाज के प्रति संवेदना की चिनगारी लगाकर आगे चल देते है।

करीब पिछले तीस सालों से अजय समाजसेवा में पूर्णकालिक रूप से सक्रिय हैं। औपचारिक संस्थाओं से उन्हें घबराहट है (संस्थामुक्ति को वे अपना आदर्श मानते हैं), अपनी पसंद और विचारधारा के हिसाब से कहीं भी चले जाते है पर कोई उन्हें बांध नहीं सकता। प्राथमिक शिक्षा, प्राकृतिक चिकित्सा और सफाई उनके मुख्य विषयों में शामिल हैं। बस्तियों, हरिजनों और अन्य गरीब लोगों के बीच ही अजय काम करना चाहते हैं। किताबों में उनकी विशेष रुचि है, वे चलती-फिरती लाइब्रेरी हैं। कहीं से लेते है, कहीं रख देते हैं और कभी भी किसी को दे देते हैं। दिल्ली में उनके साथ घूमते हुये अब तक पचासियों ऐसे किताबी-अड्डे देख चुका हूं।

घर छोड़कर गांव में बसने का खयाल अजय कई बार प्रकट कर चुके हैं लेकिन फिलहाल तो दिल्ली ने उनको बांध कर ही रखा हुआ है। उन्हें किसी जगह न जाना हो या किसी से नहीं मिलना तो कोई-न-कोई अजीब-सी वजह बात देंगे : वो हवाई जहाज़ से चलते हैं, वो विदेशी फण्ड लिए हैं, उनके घर शराब रखी रहती है। अजय अनिश्चितता (वे शायद उसे सहजता मानते होंगे) में जीते हैं। पहले मुझे उनके साथ घूमने में कई बार भटकाव

होता था। मुझे कहीं पहुंचना है किसी तय समय पर तो उस वक़्त के आसपास और ही किसी दिशा/स्थान में किसी कार्य में उलझा देंगे। आप उनके गुरूपन के बोझ तले कुछ कह भी नहीं पाते।

अजय एक सच्चे इंसान हैं और वे मेरे दोस्त ज्यादा गुरु कम हैं । उनके जैसे सरल, सहज, संवेदनशील, बेफिक्र और परमार्थी बिरले ही मिलते हैं आज के स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा की भागमदौड वाली ज़िंदगी में। उनमें गांभीर्य के साथ-साथ सहजता और विनोद भी है। अजय मजाक-व्यंग्य भी अच्छा कर लेते है, उनकी मुस्कान में बच्चों का भोलापन है। ग़ज़ब का उत्साह और विश्वास है, हिम्मत है -होंसला है : आशा का दामन कभी नहीं छोड़ते, उदासी को पास फटकने नहीं देते। किसी से मिलने जायें और कोई उनसे ठीक से बात न भी करे तो भी वे बुरा नहीं मानते...बिना किसी अपेक्षा और दुराव के आगे बढ़ जाते हैं। बोझिल और उबाऊ की रोजमर्रा वाली ज़िंदगी में भी खुशी का कुछ-न-कुछ बहाना ढूंढ लेते हैं।

कभी आपको भी दिल्ली में भटकने की फुरसत हो और सामाजिक कार्यों का कुछ तज़ुर्बा लेने का मन हो तो जरूर मिलिये अजय जी से और कुछ वक्त उनके साथ (बिना किसी एजेंडा और शर्त के) बिताइये : आपको जरूर कुछ नया मिलेगा। उनके जीवन को हम कह सकते है : सादा जीवन, उच्च विचार और नेक व्यवहार ! उनको देखकर और उनके बारे में सोचकर मुझे अक्सर दो दोहे याद आते हैं :

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह
जिनको कछु नहि चाहिये, वे साहन के साह ।। (रहीम)

कबिरा खड़ा बजार में लिए लुकाठी हाथ
जो घर फूंके आपना, चले हमारे साथ ।।

संपर्क : elevenvows@gmail. com (उनका मोबाइल तो अक्सर बदलता रहता है, कोई सिम लाकर दे दे तो रख लेते हैं और कभी उसमे रिचार्ज नहीं होता है, फिलहाल व्हाट्सएप्प पर हैं : 9582724690)

पता : T-33 ग्रीन पार्क मेन, नई दिल्ली - 16
Written by: Jasvir Arora 9878561727